मे दु खो का अम्बार टूट पडता है और वे आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाते है।''[11]

निष्कर्ष :

हम कह सकते हैं कि फॉस को पढना आज के समय मे देश की सबसे बड़ी अवसाद पूर्ण किसान आत्महत्यासे परिचित होना है। यहउपन्यास ऐसे विशयो को सामने लाता है, जिसे हम लगातार अनदेखा कर देते हैं। उदारीकरण के बाद हमारी सरकारे किसके हित में काम कर रही हैं, यह स्पष्ट हो जाता है। यह उपन्यास उन सभी आत्महत्याओं का साक्षी बनकर आता है, जिनके परिवार अपने परिजनो को खोने के बाद तौबा कर लेते हैं, कृषि नही करेंगे। आजादी के पहले से बने ये समस्याएँ आज राजनैतिक और भ्रष्टाचार के कारण नासूर बन गई है, जिनका इलाज असम्भव सा लगता है। ये समस्याएं एक चेतावनी है, जिससे पता चलता है कि यदि हालात न बदले तो ऐसा समय भी आएगा, जब दुनिया का हर आदमी उपभोक्ता होगा, वह अपने मनपसंद की कोई भी कीमत देने को तैयार होगा, पर पैदा करने, उपजाने वाला कोई न होगा।

''न तू जमीं के लिए है, न आसमां के लिए,
तेरा वजूद है अब सिर्फ दास्तां के लिए।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संजीव, 'फॉस', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण (2015), पृष्ठ संख्या :17
2. वही, पृष्ठ संख्या : 17
3. वही, पृष्ठ संख्या : 17
4. Farmers suicide rates soar above the rest पी० साईनाथ, द हिंदू अभिगमन, तिथि 21 अक्टूबर,2013
5. संजीव, 'फॉस', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण (2015), पृष्ठ संख्या : 153
6. वही, पृष्ठ संख्या : 109
7. वही, पृष्ठ संख्या : 47
8. Http://www.umtchange.org/hindi/खेतिहर संकट–70 htmc
9. संजीव, 'फॉस', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण (2015), पृष्ठ संख्या : 183
10. अग्रवाल प्रमोद कुमार, भारत के विकास की चुनौतियाँ, ''भारतीय कृशि लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण (2013),पृष्ठ संख्या :37–38
11. संजीव, 'फॉस', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण (2015), पृष्ठ संख्या : 153

Scanned with OKEN Scanner